

Dr. Kumari Priyanka

History department

H. D jain college, ara

Notes for ug sem 1

भारतीय कला की प्रकृति का वर्णन करें।

भारतीय कला केवल सौंदर्यबोध या अलंकरण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह भारतीय जीवन-दर्शन, धर्म, संस्कृति और आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति है। इसकी प्रकृति विशुद्ध रूप से **आध्यात्मिक, प्रतीकात्मक और जीवनमूल्यपरक** है। नीचे इसके प्रमुख पक्षों का वर्णन किया गया है—

1. आध्यात्मिक (Spiritual) प्रकृति

भारतीय कला का मूल उद्देश्य केवल दृश्य आनंद देना नहीं, बल्कि **ईश्वर, सत्य और आत्मा के साक्षात्कार** का साधन बनना है। मंदिरों की मूर्तियाँ, नृत्य, संगीत या चित्रकला—सभी में **‘सुन्दर के माध्यम से सत्य की खोज’** निहित है।

उदाहरण - नटराज की मूर्ति केवल नृत्य का प्रतीक नहीं, बल्कि सृष्टि, पालन और संहार के ब्रह्म-नृत्य का दार्शनिक प्रतिरूप है।

2. प्रतीकात्मक (Symbolic) प्रकृति

भारतीय कला में भावों और विचारों की अभिव्यक्ति **प्रतीकों के माध्यम से** होती है। प्रत्येक रंग, मुद्रा, मुद्रा या आकृति किसी न किसी **आध्यात्मिक या दार्शनिक अर्थ** को प्रकट करती है।

जैसे - कमल पवित्रता का प्रतीक है, शंख नाद-ब्रह्म का, और चक्र धर्म के चक्र का।

3. धार्मिक एवं दार्शनिक प्रकृति

भारतीय कला का विकास धर्म और दर्शन से गहरे जुड़ा हुआ है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और पुराणों ने कला को **आदर्श, विषयवस्तु और उद्देश्य** प्रदान किया।

मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला और नाट्यशास्त्र सभी धर्म और दर्शन की अभिव्यक्तियाँ हैं।

4. लोकानुरंजक (People-oriented) प्रकृति

भारतीय कला केवल राजदरबारों तक सीमित नहीं रही। लोकजीवन, उत्सव, रीति-रिवाज, नृत्य, गीत और चित्रों में यह कला **जनमानस की संवेदना** को प्रकट करती है।

मधुबनी, पिथोरा, वारली, और पटचित्र जैसे लोकचित्र इसके सशक्त उदाहरण हैं।

5. सामंजस्यपूर्ण और समग्र (Harmonious and Integral) प्रकृति

भारतीय कला में **धर्म, नीति, सौंदर्य और लोकजीवन** का अद्भुत समन्वय है। यहाँ कला जीवन से पृथक नहीं, बल्कि उसका अभिन्न अंग है।

जैसे - वास्तुशास्त्र में स्थापत्य केवल इमारत नहीं, बल्कि मानव और प्रकृति के सामंजस्य की अभिव्यक्ति है।

6. आदर्शवादी एवं नैतिक प्रकृति

भारतीय कला में **नैतिकता और आदर्शों** की प्रतिष्ठा है। कला का उद्देश्य व्यक्ति को उच्च मूल्यों की ओर प्रेरित करना है।

राम, कृष्ण, बुद्ध, शिव, पार्वती, सीता आदि के चित्रण में आदर्श मानव चरित्र की झलक मिलती है।

7. स्थायित्व और निरंतरता (Continuity)

भारतीय कला ने समय-समय पर नए रूप अपनाए, परंतु उसका मूल स्वर—**आध्यात्मिकता, भावनात्मक और सांस्कृतिक चेतना**—अविच्छिन्न रहा।

सिंधु घाटी की मूर्तियों से लेकर आधुनिक युग की कला तक एक निरंतर सांस्कृतिक सूत्र विद्यमान है।

निष्कर्ष:

भारतीय कला की प्रकृति **आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक** है। यह केवल दृश्य आनंद नहीं, बल्कि जीवन के **सत्य, शिव और सुंदर** की साधना है। भारतीय कला मानव और परमात्मा के बीच **एक सेतु** का कार्य करती है, जहाँ सौंदर्य साधना का मार्ग बन जाता है।